

यीशु मसीह का प्रकटीकरण - क्रमांक तीन

भविष्यवाणी के आधारों का अनावरण: प्रकटीकरण और सत्य के मार्ग का अध्ययन

Jeff Pippenger

2023-08-21

इस प्रकार, क्षेत्र में खोज करने और सत्य के अनमोल रत्नों के लिए खोदने पर, छिपे हुए खजाने प्रकट होते हैं। अनपेक्षित रूप से हमें बहुमूल्य अयस्क मिलता है, जिसे एकत्र कर संजोकर रखना है। और खोज जारी रखनी है। अब तक मिला बहुत-सा खजाना सतह के पास ही पड़ा रहा और आसानी से प्राप्त हो गया। जब खोज सही ढंग से की जाती है, तब निर्मल समझ और हृदय बनाए रखने के लिए हर प्रयास किया जाता है। जब मन खुला रखा जाता है और वह निरंतर प्रकटीकरण के क्षेत्र में खोज करता रहता है, तब हमें सत्य के समृद्ध निक्षेप मिलेंगे।

पुराने सत्य नए पहलुओं में प्रकट होंगे, और वे सत्य भी सामने आएँगे जिन्हें खोज में अनदेखा कर दिया गया था। त्रुटि के कुतर्क के नीचे महान सत्य दबे रहे हैं, परन्तु परिश्रमी खोजी उन्हें ढूँढ़ निकालेगा। जब वह सत्य के अमूल्य रत्नों के खजाने को पाता और खोलता है, तो यह कोई चोरी नहीं है; क्योंकि जो कोई इन रत्नों की कद्र करता है, वह भी उन्हें अपना सकता है, और तब उसके पास भी एक खजाना होगा जिसे वह दूसरों के लिए खोल सके। जो बाँटता है, वह अपने को उस खजाने से वंचित नहीं करता; क्योंकि जब वह उसे इस प्रकार परखता है कि वह उसे ऐसे ढंग से प्रस्तुत कर सके जो दूसरों को आकर्षित करे, तब उसे नए-नए खजाने मिलते हैं...

जो लोग सत्य के शिक्षक के रूप में लोगों के सामने खड़े होते हैं, उन्हें गंभीर विषयों से जूझना चाहिए। उन्हें तुच्छ विषयों की चर्चा में बहुमूल्य समय नहीं लगाना चाहिए। वे वचन का अध्ययन करें, और वचन का प्रचार करें। उनके हाथों में वचन एक तीक्ष्ण, दोधारी तलवार के समान हो। वह अतीत की सच्चाइयों की गवाही दे और भविष्य में क्या होने वाला है, यह दिखाए।

"भविष्यवाणी के सभी महान सत्यों पर बढ़ी हुई ज्योति चमकेगी, और वे नवीनता और दीप्ति में दिखाई देंगे, क्योंकि धर्म के सूर्य की तेजस्वी किरणें सब कुछ आलोकित कर देंगी।" Manuscript Releases, खंड 1, 37-40.

मेरा विश्वास है कि पिछले लेखों के माध्यम से मैंने पर्याप्त भविष्यवाणी-संबंधी निरूपण स्थापित कर दिए हैं, ताकि जब हम प्रकाशितवाक्य की पुस्तक के माध्यम से आगे बढ़ना शुरू करें, तो हमारे पास संदर्भ के लिए एक अच्छा आधार हो। यदि आप ये लेख ऑनलाइन पढ़ रहे हैं, तो मुझे आशा है कि आप समझते होंगे कि ये लेख दिनांकानुसार क्रम में हैं। मैं समझता हूँ कि जो लोग इन लेखों का अनुसरण कर रहे हैं उनमें से कई उन बातों से पहले ही परिचित हैं जिन्हें मैं साझा कर रहा हूँ, और इस सारे दोहराव के लिए मैं उनसे क्षमा चाहता हूँ। हम जिन सत्य बातों पर काम कर रहे हैं, उनके लिए पर्याप्त बाइबिलीय समर्थन देने का मैं प्रयास कर रहा हूँ, ताकि Future for America द्वारा अपनाए जाने वाले सिद्धांतों से नए लोग भी समझ सकें और जुड़े रहें, भले ही उन्हें इन अवधारणाओं से उतनी परिचितता न हो जितनी हममें से कई को पहले से है।

कुछ अत्यंत शक्तिशाली सत्य हैं, जिन्हें मैंने हाल तक कभी पहचाना नहीं था, जो प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में उद्धाटित किए गए हैं। मैं चाहूँ तो इन सत्यों को उन्हें साझा करने से पहले भविष्यवाणी-संबंधी समर्थन का कोई आधार निर्मित करने का प्रयास किए बिना ही सीधे सार्वजनिक क्षेत्र में रख सकता था, पर ये सत्य इतने नए और इतने गंभीर हैं कि जिन पर इन्हें टिका सकूँ ऐसे किसी आधार के बिना उन्हें साझा करने के लिए मैं तैयार नहीं रहा, जिसे मैं प्रकाशितवाक्य की मुहरों का वह खुलना मानता हूँ, जो परिवीक्षा के समाप्त होने से ठीक पहले होता है।

और उसने मुझसे कहा, इस पुस्तक की भविष्यवाणी के वचनों को मुहरबंद मत कर, क्योंकि समय समीप है। जो अधर्मी है, वह अभी भी अधर्मी बना रहे; और जो अशुद्ध है, वह अभी भी अशुद्ध बना रहे; और जो धर्मी है, वह

अभी भी धर्मी बना रहे; और जो पवित्र है, वह अभी भी पवित्र बना रहे। प्रकाशितवाक्य 22:10, 11.

यीशु ने सत्य की शिक्षा देने के विषय में एक सिद्धांत प्रस्तुत किया, जो, मेरा मानना है, यहाँ लागू होता है। यह सिद्धांत पवित्र आत्मा के कार्य की पहचान के संदर्भ में प्रस्तुत किया गया है।

और जब वह आएगा, तो वह पाप, धर्म और न्याय के विषय में संसार को दोषी ठहराएगा: पाप के विषय में, क्योंकि वे मुझ पर विश्वास नहीं करते; धर्म के विषय में, क्योंकि मैं अपने पिता के पास जा रहा हूँ, और तुम मुझे फिर नहीं देखोगे; न्याय के विषय में, क्योंकि इस संसार का प्रधान दोषी ठहराया जा चुका है। मेरे पास तुम्हें कहने के लिए और भी बहुत सी बातें हैं, परन्तु तुम अभी उन्हें सह नहीं सकते। परन्तु जब वह, सत्य का आत्मा, आएगा, तो वह तुम्हें समस्त सत्य में ले चलेगा; क्योंकि वह अपनी ओर से नहीं कहेगा, पर जो कुछ वह सुनेगा, वही कहेगा; और वह तुम्हें आने वाली बातें बताएगा। वह मेरी महिमा करेगा; क्योंकि वह जो कुछ मेरा है, उसे लेकर तुम्हें बताएगा। यूहन्ना 16:8-16.

जब मसीह ने कहा, "मुझे तुमसे अभी बहुत सी बातें कहना है, पर तुम अब उन्हें सह नहीं सकते," तो यह मेरे इस विश्वास की पुष्टि करता है कि अब साझा करने के लिए बहुत कुछ है, परन्तु पहले उन सत्यों को स्थापित करने के लिए एक तार्किक आधार होना चाहिए। यह कहते हुए, पूर्ववर्ती पद यह बताते हैं कि तीन स्वर्गदूतों के संदेशों को इस प्रकार प्रस्तुत किया गया है कि पवित्र आत्मा "पाप, धर्म और न्याय के विषय में संसार को दोषी ठहराता है।" ये तीनों संदेश मिलकर अंतिम चेतावनी का संदेश हैं, इसलिए पवित्र आत्मा के कार्य की पहचान कराने वाला यह खंड एक महत्वपूर्ण साक्ष्य है, क्योंकि यह इस बात पर बल देता है कि संदेश क्रमिक रूप से समझा जाता है, और उसे केवल वही समझते हैं जिनके पास पवित्र आत्मा का तेल है। यूहन्ना प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में इसी सत्य को प्रस्तुत करता है, जब वह यह दर्शाता है कि वह संसार के अंत में सब्त की आराधना करने वाला सेवेंथ-डे एडवेंटिस्ट है।

प्रभु के दिन मैं आत्मा में था, और अपने पीछे तुरही की-सी एक बड़ी आवाज़ सुनी। प्रकाशितवाक्य 1:10

दुनिया के अंत में सातवें दिन के एडवेंटिस्ट प्रकाशितवाक्य में खोला गया संदेश समझेंगे, क्योंकि वे "आत्मा में" हैं। उस दृष्टान्त के संदर्भ में, जिसके बारे में हमें बताया गया है कि वह "एडवेंटिस्ट लोगों के अनुभव को चित्रित करता है," यूहन्ना एक बुद्धिमान कुँवारी के समान है, क्योंकि उसके पास आत्मा का तेल है। वह दुनिया के अंत में उन बुद्धिमान कुँवारियों का प्रतिनिधित्व करता है, जो अपने "पीछे" से एक बड़ी आवाज़ सुनती हैं। उसके "पीछे से" आने वाली वह आवाज़ अगले ही पद में अल्फा और ओमेगा के रूप में पहचानी जाती है, और वह आवाज़ उसे पुराने मार्गों पर लौटकर उनमें चलने के लिए कहती है।

यहोवा यों कहता है: मार्गों पर खड़े हो, और देखो, और प्राचीन पथों के विषय में पूछो कि भला मार्ग कौन सा है, और उसी पर चलो; तब तुम अपने प्राणों के लिए विश्राम पाओगे। परन्तु उन्होंने कहा, हम उस पर नहीं चलेंगे। यिर्मयाह 6:16.

"विश्राम" जिसका यिर्मयाह उल्लेख करता है, वह अंतिम वर्षा के समय पवित्र आत्मा का उंडेला जाना है। अगली आयत में यिर्मयाह मूर्ख कुँवारियों का दूसरा उदाहरण देता है, जो एडवेंटवाद की नींव (पुराने मार्गों) पर लौटने और उन पर चलने से इनकार करती हैं।

साथ ही मैंने तुम्हारे ऊपर पहरेदार नियुक्त किए और कहा, 'नरसिंगे की ध्वनि पर ध्यान दो।' पर उन्होंने कहा, 'हम ध्यान नहीं देंगे।' यिर्मयाह 6:17.

जब यूहन्ना अपने पीछे से आने वाली उस आवाज़ को सुनता है जो उसे पुराने मार्गों या एडवेंटिज़्म की नींव की ओर निर्देशित करती है, तो वह आवाज़ तुरही के समान होती है। वह आवाज़ उन 'प्रहरियों' के माध्यम से पहुँचाई जाती है जिन्हें परमेश्वर ने एडवेंटिज़्म पर नियुक्त किया है। फ़ादर मिलर वह प्रहरी थे जिन्होंने एडवेंटिज़्म के आरंभ में, पहले स्वर्गदूत की उस घोषणा के समय, जो न्याय के उद्घाटन की सूचना देती थी, चेतावनी की तुरही फूँकी। परन्तु यूहन्ना विशेष रूप से उनका प्रतिनिधित्व करता है जो तीसरे स्वर्गदूत का संदेश घोषित करते हैं, जो न्याय के समापन की

घोषणा करता है। वह उनका प्रतिनिधित्व करता है जो उन नींवों पर लौटते हैं जिन्हें परमेश्वर ने मिलर के कार्य के द्वारा स्थापित किया।

हमने वर्षों से बार-बार दिखाया है (और यह हबक्कूक की तालिकाओं में पाया जा सकता है) कि पहले स्वर्गदूत का संदेश "परमेश्वर का भय मानो" पाप का बोध कराने के लिए है, और दूसरे स्वर्गदूत का संदेश वह है जहाँ धार्मिकता प्रकट होती है, तथा तीसरा न्याय की पहचान कराता है। ये तीनों चरण तीन स्वर्गदूतों के भी हैं और पवित्र आत्मा के कार्य के भी तीन चरण हैं। ये तीन चरण उन तीन इब्री अक्षरों द्वारा भी निरूपित हैं जो उस इब्री शब्द का निर्माण करते हैं जिसका अनुवाद "सत्य" के रूप में किया जाता है। यूहन्ना सोलह के अंश में, यीशु पवित्र आत्मा के उस कार्य के विषय में बोलता है जो परमेश्वर के लोगों को "सम्पूर्ण सत्य" में ले चलता है और साथ ही उन्हें "आनेवाली बातें" भी दिखाता है। फिर भी यीशु कहता है कि उसके पास "तुमसे कहने को बहुत सी बातें हैं, पर तुम अब उन्हें सह नहीं सकते।"

मुझे आशा है कि "सत्य" के रूप में अनूदित हिब्रू शब्द के महत्त्व के कुछ पहलू आप समझ गए होंगे। क्योंकि हमने अभी-अभी उस प्रतीक को अपने अध्ययन में लागू करना शुरू किया है। प्रकाशितवाक्य अध्याय 1 की पहली तीन आयतों में परमेश्वर और मनुष्य के बीच संचार की प्रक्रिया की पहचान की जाती है। यह तो उस से भी पहले पहचानी जाती है, जब प्रकाशितवाक्य परमेश्वरत्व के त्रि-स्वरूप की पहचान कराता है। प्रकाशितवाक्य की अंतिम आयतों में इसे दूसरा साक्षी मिलता है, और ऐसा करते हुए, "line upon line" लागू करने के आधार पर, यह और अधिक प्रकाश देती है।

फिर जब हम उत्पत्ति 1:1-2:3 को जोड़ते हैं, तो हम एक तीसरी गवाही और भविष्यवाणी की एक और रेखा पाते हैं, जिसे प्रकाशितवाक्य के आरंभ और अंत में पूर्व की दो रेखाओं पर रखा जा सके।

फिर हम पुराने नियम में आने वाले एलिय्याह की पहचान बताने वाली अंतिम प्रतिज्ञा जोड़ते हैं, और हमारे पास चार भविष्यसूचक पंक्तियाँ हो जाती हैं।

फिर हम नए नियम का पहला अध्याय जोड़ते हैं, और जब हम सभी रेखाओं पर 'आल्फा और ओमेगा' के सिद्धांत को लागू करते हैं, तो बाइबल में पाए जाने वाले परम संदेश को समेटने के लिए हमारे पास पाँच रेखाएँ होती हैं। यदि हम उन पाँच रेखाओं पर, जिनकी हमने पहले ही पहचान कर ली है, उस सिद्धांत को समान रूप से लागू करके उन्हें पूरा करें, तो हमें मत्ती के अंत और यूहन्ना के अंत में भी उसी जानकारी की गवाही दिखाई देनी चाहिए जिसकी गवाही उन सभी पाँच 'प्रथम और अंतिम' भविष्यवाणी की रेखाएँ देती हैं जिन पर हम विचार कर रहे हैं।

वह संदेश जिसकी मुहर खोली जा रही है, प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में स्थापित है; इसलिए वह अन्य रेखाओं के लिए संदर्भ बिंदु है, बहन वाइट के इस कथन के अनुरूप कि "बाइबल की सारी पुस्तकें प्रकाशितवाक्य में मिलती और समाप्त होती हैं।" प्रकाशितवाक्य की पुस्तक के पहले तीन पदों का संदेश उस प्रक्रिया की पहचान करता है जिसके द्वारा परमेश्वर अपना वचन यूहन्ना तक पहुँचाते हैं ताकि वह उसे लिखकर कलीसियाओं को भेज दे। जैसा कि पहले ही उल्लेख किया गया है, नए नियम की पहली पुस्तक यीशु मसीह की वंशावली प्रस्तुत करती है, और वह एक अत्यंत सूचनाप्रद बिंदु से आरंभ होती है।

यीशु मसीह (दाऊद के पुत्र, अब्राहम के पुत्र) की वंशावली की पुस्तक। मत्ती 1:1.

यीशु ने 'दाऊद के पुत्र' के विषय से उन्हें निरुत्तर करके कुतर्की यहूदियों के साथ अपना प्रत्यक्ष संवाद समाप्त किया; यह ऐसा विषय था जिसे वे तभी समझ सकते थे जब वे आरंभ और अंत के बाइबिल सिद्धांत को समझते। वे नहीं समझे, और अधिकांश एडवेंटिस्ट भी नहीं समझते। जो कोई इतिहास के दोहराए जाने के सिद्धांत के विरुद्ध तर्क करता है, वह यह दिखाता है कि वह यह नहीं समझता कि प्राचीन इस्राएल आधुनिक इस्राएल का प्रतिरूप है; और उस सिद्धांत पर विश्वास करने से उसकी अनिच्छा वही अनिच्छा है जो प्राचीन इस्राएल के अंत में उसी सिद्धांत को समझने के प्रति दिखाई गई थी। यीशु ने यह सिद्धांत यहूदियों के लिए अपनी अंतिम पहली में इस प्रकार प्रस्तुत किया

कि उन्होंने उन्हें इस पहली की ओर ध्यान दिलाया: दाऊद का प्रभु दाऊद का पुत्र भी कैसे हो सकता है?

यूहन्ना का पहला अध्याय यह बताता है कि आदि में वचन परमेश्वर के साथ था, और वचन परमेश्वर है, और वचन ने सभी वस्तुओं की रचना की। यह निस्संदेह उन अन्य पंक्तियों के अनुरूप है जिनका हम उल्लेख कर रहे हैं। और यदि हम आगे यूहन्ना के सुसमाचार की अंतिम पंक्तियों पर विचार करें, तो हम देखते हैं कि पतरस, यह सुनने के बाद कि यीशु ने बताया कि वह कैसे मरेगा, यीशु से पूछता है कि प्रेरित यूहन्ना का क्या होगा।

पतरस ने उसे देखकर यीशु से कहा, "प्रभु, और यह व्यक्ति क्या करेगा?" यीशु ने उससे कहा, "यदि मैं चाहूँ कि वह तब तक ठहरा रहे जब तक मैं आऊँ, तो तुझसे क्या? तू मेरे पीछे चल।" तब भाइयों के बीच यह बात फैल गई कि वह चेला नहीं मरेगा; परन्तु यीशु ने उससे यह नहीं कहा था कि वह नहीं मरेगा, बल्कि यह कि, "यदि मैं चाहूँ कि वह तब तक ठहरा रहे जब तक मैं आऊँ, तो तुझसे क्या?" यह वही चेला है जो इन बातों की गवाही देता है और जिसने इन बातों को लिखा भी है; और हम जानते हैं कि उसकी गवाही सत्य है। और भी बहुत सी बातें हैं जो यीशु ने कीं; यदि वे सब एक-एक करके लिखी जाएँ, तो मैं समझता हूँ कि जो पुस्तकें लिखी जाएँगी, उन्हें समाने के लिए स्वयं संसार भी पर्याप्त न होगा। आमीन। यूहन्ना 21:21-25.

पतरस यह जानना चाहता था कि यूहन्ना कैसे मरेगा, या फिर यूहन्ना मरेगा भी या नहीं। इस प्रश्न का उत्तर उस खंड में दो बार आता है—पहले यीशु ने कहा और फिर यूहन्ना ने दोहराया, "यदि मैं चाहूँ कि वह [यूहन्ना] मेरे आने तक ठहरा रहे, तो इससे तुम्हारा क्या लेना-देना?" यूहन्ना वास्तव में यीशु के दूसरे आगमन तक जीवित रहा।

आप उसी "सत्य" को तभी देख या सुन सकते हैं, जब आप इतिहास की पुनरावृत्ति पर विश्वास करते हैं, और यह भी मानते हैं कि जो इतिहास दोहराया जाना है, वह दुनिया के अंत में ही दोहराया जाता है। दुनिया का अंत वही स्थान है जहाँ यूहन्ना थे जब उन्होंने प्रकाशितवाक्य की पुस्तक लिखी। यूहन्ना के सुसमाचार की अंतिम पुस्तक आरंभ और अंत के अन्य वर्णनों से सहमत है, क्योंकि वह यूहन्ना को उन घटनाओं के इतिहास में रखती है जो दूसरे आगमन की ओर ले जाती हैं, जहाँ वह, अंतिम चेतावनी संदेश का प्रचार करने वालों का प्रतिनिधित्व करते हुए, उस संदेश को कलीसियाओं को भेजता है।

प्रारम्भिक मसीहियों के दिनों में, मसीह दूसरी बार आए। उनका पहला आगमन बेतलेहम में हुआ, जब वे शिशु के रूप में आए। उनका दूसरा आगमन पत्मोस द्वीप पर हुआ, जब उन्होंने अपनी महिमा में स्वयं को यूहन्ना रहस्योद्घाटक के सामने प्रकट किया, जो उन्हें देखकर 'उनके चरणों में मरे हुए-से गिर पड़ा'। परन्तु मसीह ने उसे उस दर्शन को सहने की शक्ति दी, और फिर उसे एक संदेश दिया जिसे एशिया की कलीसियाओं को लिखना था, जिनके नाम हर कलीसिया की विशेषताओं का वर्णन करते हैं।

"वह प्रकाश जो मसीह ने अपने सेवक भविष्यद्वक्ता को प्रकट किया, हमारे लिए है। उसके प्रकटीकरण में तीन स्वर्गदूतों के संदेश दिए गए हैं, और उस स्वर्गदूत का वर्णन भी है जो महान सामर्थ्य के साथ स्वर्ग से उतरकर अपनी महिमा से पृथ्वी को आलोकित करने वाला था। उसमें अंतिम दिनों में होने वाली दुष्टता के विरुद्ध, और पशु की छाप के विरुद्ध चेतावनियाँ हैं। हमें इस संदेश को केवल पढ़ना और समझना ही नहीं, बल्कि इसे संसार के सामने स्पष्ट और निर्भीकता से घोषित भी करना है। यूहन्ना को प्रकट की गई इन बातों को प्रस्तुत करके हम लोगों को जागृत कर सकेंगे।" मैनुस्क्रिप्ट रिलीज़ेज़, खंड 19, 41.

यूहन्ना के सुसमाचार का अंत, प्रकाशितवाक्य की पहली तीन आयतों की भांति, संचार की प्रक्रिया को रेखांकित करता है, यूहन्ना को "दूसरे आगमन" के इतिहास में भविष्यसूचक रूप से स्थित करके। इस प्रकार, यीशु के पहले "दूसरे आगमन" (पत्मोस) का उपयोग उनके अंतिम "दूसरे आगमन" को दर्शाने के लिए किया गया है। यह उन अन्य रेखाओं के साथ पूर्णतः जुड़ता है जिन पर हम विचार कर रहे हैं, क्योंकि यह संसार के अंत में, पत्मोस पर, जहाँ उसे यीशु मसीह का प्रकाशितवाक्य प्राप्त होता है, यूहन्ना का प्रतिनिधित्व करता है। मत्ती के सुसमाचार के अंत के बारे में क्या?

तब ग्यारह शिष्य गलील में उस पहाड़ पर गए जहाँ यीशु ने उन्हें ठहराया था। और जब उन्होंने उसे देखा, तो उन्होंने उसकी आराधना की; परन्तु कुछ को संदेह हुआ। और यीशु उनके पास आकर उनसे कहा, स्वर्ग और पृथ्वी का सारा अधिकार मुझे दिया गया है। इसलिए तुम जाकर सब जातियों को सिखाओ, और उन्हें पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम से बपतिस्मा दो; और उन्हें जो कुछ मैंने तुम्हें आज्ञा दी है, उन सब बातों को मानना सिखाओ; और देखो, मैं सदैव तुम्हारे साथ हूँ, जगत के अंत तक। आमीन। मत्ती 28:16-20.

इस अंश में समस्त अधिकार यीशु को दिया गया है, और यह निस्संदेह उनकी सृजनात्मक शक्ति है। और फिर वह यह आज्ञा देता है कि पिता, पुत्र और उत्पत्ति 1 में जलों पर मंडराने वाले पवित्र आत्मा के नाम में, तथा उन सात आत्माओं के नाम में जो परमेश्वर के सिंहासन के सामने हैं, बपतिस्मा दिया जाए। यह अंश यह स्पष्ट करता है कि मसीहियों को स्वर्गीय त्रयी के तीन व्यक्तियों को तीन पृथक अस्तित्वों के रूप में मानना चाहिए। मत्ती का अंत भी, अन्य छह की तरह, पंक्तियाँ जोड़ता है।

मसीह ने बपतिस्मा को अपने आत्मिक राज्य में प्रवेश का चिन्ह बनाया है। उन्होंने इसे एक अनिवार्य शर्त ठहराया है, जिसका पालन उन सबको करना है जो पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा के अधिकार के अधीन माने जाना चाहते हैं। मनुष्य कलीसिया में घर पाने से पहले, परमेश्वर के आत्मिक राज्य की दहलीज पार करने से पूर्व, उसे दिव्य नाम की छाप ग्रहण करनी है—'यहोवा हमारी धार्मिकता।' यिर्मयाह 23:6.

बपतिस्मा संसार का अत्यंत गंभीर त्याग है। जो लोग पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा—इन तीनों के नाम में बपतिस्मा लेते हैं, वे अपने मसीही जीवन के आरंभ में ही सार्वजनिक रूप से यह घोषित करते हैं कि उन्होंने शैतान की सेवा त्याग दी है, और राजघराने के सदस्य—स्वर्गीय राजा की संतान—बन गए हैं। उन्होंने इस आज्ञा का पालन किया है, 'उनमें से निकल आओ, और अलग हो जाओ, ... और अशुद्ध वस्तु को न छुओ।' और उनमें यह प्रतिज्ञा पूरी होती है, 'मैं तुम्हें अपने पास ग्रहण करूँगा, और तुम्हारा पिता बनूँगा, और तुम मेरे पुत्र-पुत्रियाँ ठहरोगे,' ऐसा सर्वशक्तिमान प्रभु कहता है। 2 कुरिन्थियों 6:17, 18.

जब मसीही लोग बपतिस्मा की गंभीर विधि को स्वीकार करते हैं, तब वह उनकी उस प्रतिज्ञा को दर्ज करता है जो वे उसके प्रति सच्चे रहने के लिए करते हैं। यह प्रतिज्ञा उनकी निष्ठा की शपथ है। उन्हें पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम में बपतिस्मा दिया जाता है। इस प्रकार वे स्वर्ग की तीन महान शक्तियों के साथ संयुक्त हो जाते हैं। वे संसार का त्याग करने और परमेश्वर के राज्य की व्यवस्थाओं का पालन करने का वचन देते हैं। अब से उन्हें नए जीवन में चलना है। अब उन्हें मनुष्यों की परंपराओं का अनुसरण नहीं करना है। अब उन्हें बेईमान तरीकों का अनुसरण नहीं करना है। उन्हें स्वर्ग के राज्य की विधियों का पालन करना है। उन्हें परमेश्वर की महिमा की खोज करनी है। यदि वे अपनी प्रतिज्ञा के प्रति सच्चे रहेंगे, तो उन्हें अनुग्रह और सामर्थ्य प्रदान की जाएगी, जो उन्हें समस्त धार्मिकता को पूरा करने में समर्थ बनाएगी। 'जितनों ने उसे ग्रहण किया, उन्हें उसने परमेश्वर की संतान बनने का अधिकार दिया; अर्थात् उनको जो उसके नाम पर विश्वास करते हैं।' सुसमाचार-प्रचार, 307.

यीशु अपने वचन में आरंभ के द्वारा अंत को दर्शाते हैं, क्योंकि वही वचन हैं, और वही अल्फा और ओमेगा हैं।

इन सात "रेखाओं" को एक साथ रखने से परमेश्वर और मनुष्य के बीच संचार की प्रक्रिया की एक अत्यंत विस्तृत तस्वीर बनती है, तथा अन्य "रेखाओं" के साक्षियों द्वारा प्रस्तुत और स्थापित अनेक अन्य निर्णायक और महत्वपूर्ण सत्य भी सामने आते हैं। अल्फा और ओमेगा का प्रतिनिधित्व करने वाली भविष्यवाणी की सात "रेखाएँ"। लेकिन मलाकी की पुस्तक के बारे में क्या?

मलाकी की पुस्तक एडवेंटिज़्म में अवफादार याजकों के विरुद्ध एक कड़ी फटकार है। यह संसार के अंत में एडवेंटिज़्म के भीतर उपासकों के दो वर्गों की पहचान से आरंभ होती है।

भविष्यद्वक्ता मलाकी के द्वारा इस्राएल के लिए यहोवा के वचन का भार। मैंने तुमसे प्रेम किया है, यहोवा की यह वाणी है। तो भी तुम कहते हो, 'तूने हमसे कैसे प्रेम किया?' क्या एसाव याकूब का भाई न था? यहोवा की यह वाणी है; तौभी मैंने याकूब से प्रेम रखा। मलाकी 1:1, 2.

मलाकी हमें आगे यह बताता है कि संसार के अंत में उपासकों के दो वर्ग पुजारियों के दो वर्ग हैं।

और अब, हे याजकों, यह आज्ञा तुम्हारे लिये है। यदि तुम न सुनोगे और यदि तुम मन में यह न ठानोगे कि मेरे नाम की महिमा करो, तो सेनाओं के यहोवा कहता है, मैं तुम पर शाप भेजूँगा, और तुम्हारी आशीषों को शाप दूँगा; हाँ, मैं उन्हें पहले ही शाप दे चुका हूँ, क्योंकि तुम इसे मन में नहीं रखते। मलाकी 2:1, 2.

मलाकी की शुरुआत याजकों के दो वर्गों के माध्यम से लाओदिकिया और फिलाडेल्फिया के संदेश का प्रतिरूप प्रस्तुत करती है। याजकों को 'सुनो' की आज्ञा दी गई है। यूहन्ना उन याजकों का प्रतिनिधित्व करता है जो सुनते हैं, और याजक परमेश्वर की वाचा के चुने हुए लोगों का प्रतिनिधि होता है। वे पहले से ही शापित हैं और यदि वे 'सुन' नहीं लेते और 'इसे हृदय में नहीं लगाते'—या 'लगाना नहीं चाहेंगे'—तो फिर से शापित होंगे।

तुम भी, जीवित पत्थरों के समान, एक आत्मिक भवन के रूप में बनाए जा रहे हो, ताकि पवित्र याजकत्व बनकर आत्मिक बलिदान चढ़ाओ, जो यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर को ग्रहणयोग्य हैं। इसलिए शास्त्र में भी यह लिखा है, “देखो, मैं सिय्योन में एक कोने का प्रधान पत्थर रखता हूँ, चुना हुआ, बहुमूल्य; और जो उस पर विश्वास करता है वह लज्जित न होगा।” सो तुम्हारे लिए जो विश्वास करते हो, वह बहुमूल्य है; पर जो अवज्ञाकारी हैं, “जिस पत्थर को राजमिस्त्रियों ने अस्वीकार किया, वही कोने का सिरा बन गया,” और “ठोकर का पत्थर और ठेस की चट्टान”; वे वचन पर ठोकर खाते हैं, क्योंकि वे अवज्ञाकारी हैं—और इसी के लिए वे ठहराए भी गए थे। परन्तु तुम एक चुनी हुई पीढ़ी, एक राजसी याजकत्व, एक पवित्र जाति, एक निज प्रजा हो; ताकि तुम उसके गुण प्रगट करो जिसने तुम्हें अन्धकार से अपनी अद्भुत ज्योति में बुलाया है—जो पहले कोई प्रजा न थे, पर अब परमेश्वर की प्रजा हो; जिन्हें दया न मिली थी, पर अब दया मिली है। 1 पतरस 2:5-10.

याजक परमेश्वर के चुने हुए लोग हैं, जिनकी परीक्षा मंदिर की नींव में "कोने के पत्थर" द्वारा होती है। कोने का पत्थर वही होता है जिसके अनुरूप अन्य सभी नींव के पत्थर सीध में लगाए जाते हैं, और वही पत्थर पूरे मंदिर का भार भी उठाता है। मिलर के लिए "कोने का पत्थर" "लैव्यव्यवस्था" अध्याय छब्बीस के "सात बार" था। "कोने के पत्थर", या वह पत्थर जिसे राजमिस्त्रियों ने अस्वीकार कर दिया था, की कथा वास्तव में मंदिर के निर्माण की एक सच्ची घटना है, जिसका वर्णन "Spirit of Prophecy" के लेखों में बहुत विशेष रूप से किया गया है। पहले उस पत्थर के बारे में एक बात यह है, जिसे अस्वीकार किया गया था, कि अस्वीकार किए जाने के बाद उसे एक ओर रख दिया गया था, और उसके बाद से मंदिर के निर्माता अपने कार्य-क्षेत्र के भीतर अलग रखे गए उसी कोने के पत्थर से बार-बार ठोकर खाते थे। वह ठोकर का पत्थर था।

मलाकी में परमेश्वर दुष्ट याजकों—जिन्हें मूर्ख लाओदीकियाई कुमारियाँ भी कहा जाता है—को सूचित करता है कि वह उन्हें "शापित" करने वाला है और कर भी चुका है। वह उन्हें इसलिए शाप देता है क्योंकि वे एलिय्याह के संदेश को "सुन" कर अपने हृदय पर "रख" नहीं लेते। एलिय्याह का संदेश पिताओं के हृदय बच्चों की ओर और बच्चों के हृदय पिताओं की ओर फेर देता है। उनके हृदयों का यह फिरना पिताओं और बच्चों के संबंध में एलिय्याह के संदेश को सुनने का प्रतीक है, जो प्रथम और अंतिम के सिद्धांत को दर्शाता है। प्रथम और अंतिम के संदेश को सुन लेना पर्याप्त नहीं; उसे हृदय पर रखा जाना चाहिए। एलिय्याह के संदेश को स्वीकार करना, उसे अपने हृदय पर रखना है। यदि कोई याजक उस सिद्धांत को नहीं सुनेगा, तो वह शापित होगा।

उन्होंने अपने ऊपर यह श्राप स्वयं ले लिया, जब 1863 में उन्होंने मिलर द्वारा खोजे गए सबसे पहले मौलिक सत्य को अस्वीकार करने की प्रक्रिया शुरू की और आज तक उस अस्वीकृति को ही जारी रखा है। परन्तु यद्यपि क्रमिक श्राप 1863 में आरम्भ हुआ, (क्योंकि वे पहले से ही श्रापित हैं), भविष्यकाल का जो श्राप है, वह तब घटित होता है जब रविवार के कानून के समय उन्हें प्रभु के मुख से उगल दिया जाता है। मलाकी का आरम्भ अंत को चित्रित करता है, क्योंकि अंत बुद्धिमान और मूर्ख याजकों को दी गई अंतिम चेतावनी का प्रतिनिधित्व करता है। मलाकी में बुद्धिमान और मूर्खों का प्रतिनिधित्व एसाव और याकूब के रूप में किया गया है। ज्येष्ठ भाई, पहलौठे होने के जन्मसिद्ध अधिकार के माध्यम से वाचा का प्रतिनिधित्व करता है, इसके विपरीत एक कनिष्ठ भाई है। ज्येष्ठ पहला और कनिष्ठ

अंतिम।

मलाकी में एसाव और याकूब दोनों लाओदीकियन ऐडवेंटिस्ट हैं, परंतु बाद वाले ने अंततः प्रभु की "आवाज़" सुनी, पश्चाताप किया और उसका नाम बदलकर इस्राएल रखा गया। बड़ा, पहिलौठा नहीं सुन सका। जिस रात याकूब ने सपना देखा और एक सीढ़ी पर स्वर्गदूतों को ऊपर चढ़ते और नीचे उतरते देखा—जो मसीह का प्रतिनिधित्व करती थी—उस रात उसने प्रभु की आवाज़ सुनी। याकूब संसार के अंत में लाओदीकियन ऐडवेंटिस्टों का प्रतिनिधित्व करता है, जो प्रकाशितवाक्य अध्याय 1 की पहली तीन आयतों का अनुभव करने पर लाओदीकियों से फिलाडेल्फियाई बन जाते हैं; यह बात यूहन्ना के उदाहरण और याकूब के उस स्वप्न से चित्रित है जिसमें उसने सीढ़ी पर स्वर्गदूतों को ऊपर चढ़ते और नीचे उतरते देखा। वह अनुभव याकूब के इस्राएल, अर्थात् फिलाडेल्फियाई, में परिवर्तन की शुरुआत को चिह्नित करता है। याकूब की परिवर्तन-कथा का समापन तब होता है जब वह पेनूएल में मसीह से कुशती करता है। इस प्रकार याकूब के ज्येष्ठाधिकार की कहानी प्रकाशितवाक्य अध्याय एक की पहली तीन आयतों से प्रारम्भ होती है, जब अंतिम चेतावनी संदेश की मुहर खोली जा रही होती है, और उसका अंत सात अंतिम विपत्तियों के समय, क्लेश के काल में होता है।

आरंभ और समापन के चारों सेट, "पंक्ति पर पंक्ति", यीशु मसीह के प्रकाशन के संदेश की गवाही देते हैं। प्रश्न यह है कि क्या मूर्ख पुरोहित सुनेंगे या नहीं।

धन्य है वह जो पढ़ता है, और वे जो इस भविष्यवाणी के वचन सुनते हैं, और उन बातों का पालन करते हैं जो उसमें लिखी हैं; क्योंकि समय निकट है। प्रकाशितवाक्य 1:3.

वे बुद्धिमान याजक जो यह सुनते हैं कि आत्मा कलीसियाओं से क्या कहता है, एलिय्याह का संदेश सुनते हैं। मिलर एलिय्याह था, और कुछ ने सुना, परन्तु दूसरों ने सुनने से इंकार कर दिया।

हजारों ने विलियम मिलर द्वारा प्रचारित सत्य को अपनाया, और संदेश का प्रचार करने के लिए एलिय्याह की आत्मा और सामर्थ में परमेश्वर के सेवकों को उठाया गया। यीशु के अग्रदूत यूहन्ना के समान, इस गंभीर संदेश का प्रचार करने वाले लोग पेड़ की जड़ पर कुल्हाड़ी रखने और मनुष्यों को मन फिराव के योग्य फल लाने का आह्वान करने के लिए अपने आप को बाध्य पाते थे। उनकी गवाही ऐसी थी कि वह कलीसियाओं को जगा दे, उन पर सामर्थी प्रभाव डाले, और उनके वास्तविक चरित्र को प्रकट कर दे। और जब आने वाले क्रोध से बचने की गंभीर चेतावनी सुनाई गई, तो कलीसियाओं से जुड़े बहुतों ने आरोग्यकारी संदेश को ग्रहण किया; उन्होंने अपनी विमुखता देखी, और मन फिराव के कड़वे आँसुओं तथा आत्मा की गहरी पीड़ा के साथ परमेश्वर के सामने दीन हो गए। और जब परमेश्वर का आत्मा उन पर ठहरा, तब उन्होंने यह पुकार बुलंद करने में सहायता की, 'परमेश्वर से डरो, और उसको महिमा दो; क्योंकि उसके न्याय का समय आ पहुँचा है।' अर्ली राइटिंग्स, 233.

मिलर का प्रतिरूप एलिय्याह और यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाला दोनों थे, क्योंकि यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले ने मसीह के प्रथम आगमन के लिए मार्ग तैयार किया, और मिलर ने 22 अक्टूबर, 1844 को मसीह के स्वर्गीय पवित्रस्थान के परम पवित्र स्थान में आने के लिए मार्ग तैयार किया। मलाकी यूहन्ना और मिलर के कार्य को प्रत्यक्ष रूप से चिह्नित करता है।

देखो, मैं अपना दूत भेजूँगा, और वह मेरे आगे मार्ग तैयार करेगा; और वह प्रभु, जिसे तुम ढूँढ़ते हो, अचानक अपने मंदिर में आएगा, अर्थात् वाचा का दूत, जिसमें तुम प्रसन्न होते हो; देखो, वह आएगा, सेनाओं के यहोवा का यह वचन है। पर उसके आने के दिन में कौन ठहर सकेगा? और जब वह प्रकट होगा तो कौन खड़ा रह सकेगा? क्योंकि वह गलाने वाले की आग और धोबी के साबुन के समान है। और वह चाँदी को गलाने और शुद्ध करने वाले के समान बैठ जाएगा; और वह लेवी के पुत्रों को शुद्ध करेगा, और उन्हें सोने और चाँदी के समान परिशोधित करेगा, ताकि वे धर्म के साथ यहोवा को भेंट चढ़ाएँ। तब यहूदा और यरूशलेम की भेंट यहोवा को भाएगी, जैसे प्राचीन दिनों में और पुराने वर्षों के समान। और मैं न्याय करने के लिए तुम्हारे पास निकट आऊँगा; और मैं जादू-टोना करने वालों, व्यभिचारियों, झूठी शपथ खाने वालों, मजदूर की मजदूरी दबाने वालों, विधवाओं और

अनाथों पर अत्याचार करने वालों, और परदेसी को उसके अधिकार से वंचित करने वालों के विरुद्ध शीघ्र साक्षी ठहरूँगा, और जो मुझसे नहीं डरते — यह सेनाओं के यहोवा का वचन है। क्योंकि मैं यहोवा हूँ, मैं बदलता नहीं; इसलिए, हे याकूब की सन्तानो, तुम नाश नहीं हुए। मलाकी 3:1-6.

अपने युग के 'प्रहरी' के रूप में, मिलर का कार्य मंदिर की नींव स्थापित करने का प्रतिनिधित्व करता था। आरम्भ में उसका कार्य उस कार्य का चित्रण होना चाहिए जो मंदिर की पूर्णता का प्रतिनिधित्व करता हो। उस अंतिम कार्य के लिए एक और प्रहरी की आवश्यकता है जो तुरही को एक निश्चित ध्वनि दे। मिलर और पहले स्वर्गदूत का संदेश न्याय के उद्घाटन की घोषणा करता था, और एडवेंटवाद के अंत में, जिस प्रहरी का मिलर प्रतिरूप है, वह न्याय के समापन की घोषणा करेगा।

मलाकी में प्रभु यह वादा करता है कि वह न्याय लाएगा "जादू-टोना करनेवालों के विरुद्ध, और व्यभिचारियों के विरुद्ध, और झूठी शपथ खानेवालों के विरुद्ध, और जो मजदूर को उसकी मजदूरी में सताते हैं, तथा विधवा और अनाथ पर अत्याचार करते हैं, और परदेसी को उसके अधिकार से वंचित करते हैं, और जो मेरा भय नहीं मानते" के विरुद्ध। यहाँ जिनकी पहचान की गई है वे वे हैं जो "सेनाओं के प्रभु" का "भय नहीं मानते"। विलियम मिलर पहले स्वर्गदूत के संदेशवाहक हैं, जो मनुष्यों को "परमेश्वर का भय मानो" का आह्वान करता है। बुनियादों को अस्वीकार करना, परमेश्वर के भय को अस्वीकार करना है।

क्योंकि, देखो, वह दिन आता है जो भट्टी की तरह जलता होगा; और सब अभिमानी, हाँ, जितने दुष्टता करते हैं, भूसा बन जाएँगे; और जो दिन आने वाला है वह उन्हें जला कर भस्म कर देगा, सेनाओं के यहोवा का यह वचन है, कि न उनके लिए जड़ छोड़ेगा न डाली। परन्तु तुम जो मेरे नाम का भय मानते हो, तुम्हारे लिए धर्म का सूर्य अपने पंखों में चंगाई लेकर उदय होगा; और तुम निकलोगे और बाड़े के बछड़ों के समान उछलोगे। और तुम दुष्टों को रौंदोगे; क्योंकि जिस दिन मैं यह करूँगा, वे तुम्हारे पैरों के तलवों के नीचे राख होंगे, सेनाओं के यहोवा का यह वचन है। मेरे दास मूसा की व्यवस्था को स्मरण करो, जिसे मैंने होरेब में सारे इस्राएल के लिए, विधियों और नियमों सहित, उसे आज्ञा दी थी। देखो, यहोवा का वह बड़ा और भयानक दिन आने से पहले मैं तुम्हारे पास भविष्यद्वक्ता एलिय्याह को भेजूँगा; और वह पिताओं के मन बच्चों की ओर, और बच्चों के मन उनके पिताओं की ओर मोड़ेगा, ऐसा न हो कि मैं आकर पृथ्वी को शाप देकर मारूँ। मलाकी 4:1-6.

- बाइबल की शुरुआत (उत्पत्ति) और बाइबल का अंत (प्रकाशितवाक्य)।
- पुराने नियम की शुरुआत (उत्पत्ति) और पुराने नियम का अंत (मलाकी)।
- नए नियम की शुरुआत (मत्ती) और नए नियम का अंत (फिर से प्रकाशितवाक्य)।
- यूहन्ना की गवाही का प्रारम्भ (यूहन्ना का सुसमाचार) और यूहन्ना की गवाही का अंत (फिर प्रकाशितवाक्य)।
- मलाकी की शुरुआत और मलाकी का अंत.
- मत्ती के सुसमाचार का आरंभ और मत्ती के सुसमाचार का अंत.
- यूहन्ना के सुसमाचार का आरंभ और यूहन्ना के सुसमाचार का अंत।
- चारों सुसमाचारों का आरंभ और चारों सुसमाचारों का अंत।

जब हम उन भविष्यसूचक आरंभों या समापनों को हटा देते हैं जिनका एक से अधिक बार उल्लेख हुआ है, तो कुल भविष्यवाणी की आठ पंक्तियाँ रह जाती हैं, जिन्हें एक साथ लाकर प्रकाशितवाक्य के पहले तीन पदों पर रखा जाना है। और उत्पत्ति के अंत का क्या?

उत्पत्ति का पचासवाँ अध्याय यूसुफ की मृत्यु के साथ समाप्त होता है।

इस प्रकार योसेफ एक सौ दस वर्ष का होकर मर गया; और उन्होंने उसके शरीर पर बाम लगाकर उसे संरक्षित किया, और उसे मिस्र में एक ताबूत में रखा गया। उत्पत्ति 50:26.

अध्याय अड़तालीस याकूब की मृत्यु को चिन्हित करता है। अध्याय अड़तालीस में पहले याकूब की मृत्यु और अध्याय पचास के अंतिम पदों में यूसुफ की मृत्यु, उत्पत्ति की पुस्तक के अंतिम तीन अध्यायों पर, उसके समापन के रूप में, अल्फा और ओमेगा के हस्ताक्षर अंकित कर देती हैं।

उन दो मौतों को मिस्र में इस्राएल की दासता की शुरुआत और समाप्ति के प्रतीकों के रूप में प्रयुक्त किया जाता है। शुरुआत में याकूब का शरीर उसके पितरों के साथ दफनाने के लिए वापस ले जाया जाता है, और जब मूसा मिस्र से निकलता है, तो वह यूसुफ का शरीर उसके पितरों की कब्रगाह में दफनाने के लिए साथ ले आता है।

और मूसा यूसुफ की हड्डियाँ अपने साथ ले गया, क्योंकि उसने इस्राएल के पुत्रों से सख्ती से शपथ दिलाई थी, यह कहते हुए, "परमेश्वर अवश्य तुम्हारी सुधि लेगा; तब तुम मेरी हड्डियों को यहाँ से अपने साथ ले जाना।" निर्गमन 13:19.

उत्पत्ति का समापन अंतिम तीन अध्यायों में होता है। अध्याय अड़तालीस में याकूब (इस्राएल) अपने बारह पुत्रों पर ऐसी आशीर्ष देता है जिन्हें सीधे तौर पर इस रूप में पहचाना जाता है कि वे अन्वेषणात्मक न्याय के "अंतिम दिनों" में उन बारह गोत्रों के साथ क्या होगा, इसकी भविष्यवाणियाँ हैं।

और याकूब ने अपने पुत्रों को बुलाकर कहा, एकत्र हो जाओ, ताकि मैं तुम्हें बता दूँ कि अन्त के दिनों में तुम्हारे साथ क्या होगा। एकत्र हो जाओ और सुनो, हे याकूब के पुत्रो; और अपने पिता इस्राएल की सुनो। उत्पत्ति 49:1, 2.

जांच-पड़ताल के न्याय के "अन्तिम दिनों" में प्रभु अपने बारह पुत्रों को एकत्र करने का वादा करता है, जिन्हें प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में एक लाख चवालीस हज़ार के रूप में दर्शाया गया है। ये वही हैं जिन्हें यूहन्ना ने प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में प्रस्तुत किया है। वे याकूब की ओर से आई एक पुकार द्वारा इकट्ठे किए जाते हैं—उनके प्रारम्भिक इतिहास से आने वाली वह पुकार, जिसके विषय में उनसे "सुनने" और "मानने" को कहा गया है। अन्तिम दिनों में, याकूब के पुत्रों द्वारा प्रतीकित वे लोग एक संदेश को "सुनते" हैं और "मानते" हैं, या जैसा यूहन्ना कहता है, उसमें लिखी बातों का "पालन करते" हैं। यह पिता की ओर से बच्चों के लिए एक बुलाहट है; यह एलिय्याह का संदेश है। जो बुलाए गए हैं वे "याकूब के पुत्र[ों]" कहलाते हैं, और उनसे अपने पिता "इस्राएल" की "सुनने" को भी कहा गया है।

मलाकी में एसाव और याकूब, बुद्धिमान और मूर्ख कुँवारियों का प्रतिनिधित्व करते हैं। बुलाहट उनके पिता याकूब और उनके पिता इस्राएल से आती है, यह दर्शाते हुए कि जब अंतिम बुलाहट दी जाती है, तब हर कोई लाओदीकियाई एडवेंटिस्ट होता है, और चुनाव उनके अपने हाथ में रख दिया जाता है कि वे याकूब, धोखेबाज़, के पुत्र बनें या इस्राएल, विजयी, के। उन्हें चुनाव करने में सक्षम बनाती है संदेश के भीतर की सृष्टिकारी शक्ति। यदि संदेश पढ़ा, सुना और पालन किया जाए, तो वही सृष्टिकारी शक्ति, जिसने सब कुछ अस्तित्व में लाया, उन्हें बदल देगी और वे इस्राएल के पुत्र बन जाएँगे। सुनने से इनकार करना, याकूब, धोखेबाज़, के अनुभव को बनाए रखना है।

याकूब का एकत्र होने का आह्वान, जो प्रकाशितवाक्य में मुहर खुलने पर प्रकट हुए संदेश का भी एकत्र होने का आह्वान है, समझने के लिए एक महत्वपूर्ण प्रतीक है। लैव्यव्यवस्था छब्बीस के "सात बार" सिखाता है कि जब तक पहले बिखराव न हो, तब तक एकत्रीकरण नहीं होता। एक लाख चवालीस हज़ार वे हैं जो आह्वान से पहले बिखेर दिए गए थे। यह सत्य बाइबल में बार-बार दर्शाया गया है।

हे जातियो, प्रभु का वचन सुनो, और इसे दूर-दूर के द्वीपों में घोषित करो, और कहो, जिसने इस्राएल को तितर-बितर किया है, वही उसे फिर इकट्ठा करेगा और उसकी रखवाली करेगा, जैसे एक चरवाहा अपने झुंड की रखवाली करता है। यिर्मयाह 31:10.

एक लाख चवालीस हज़ार के साथ नवीकृत की गई वाचा में यह प्रतिज्ञा शामिल है कि परमेश्वर अपनी व्यवस्था हमारे हृदयों पर लिखेगा। परन्तु जिनके लिए प्रभु यह सृजनात्मक कार्य करता है, वे पहले से तितर-बितर किए गए हैं।

फिर यहोवा का वचन मुझ पर आया, यह कहते हुए, हे मनुष्य के सन्तान, तेरे भाई, हाँ तेरे ही भाई, तेरे कुटुम्ब के लोग, और सारे इस्राएल का घराना समूचा—वे ही हैं जिनसे यरूशलेम के निवासियों ने कहा है, "तुम लोग यहोवा से दूर हो जाओ; यह देश तो हमें निज अधिकार में दिया गया है।" इसलिये तू कह, प्रभु यहोवा यों कहता है: यद्यपि मैंने उन्हें अन्यजातियों के बीच दूर-दूर फेंक दिया है, और यद्यपि मैंने उन्हें देशों में तितर-बितर कर दिया है, तौभी जिन देशों में वे आएँगे, उन देशों में मैं उनके लिये थोड़े समय तक पवित्रस्थान ठहरूँगा। इसलिये तू कह, प्रभु यहोवा यों कहता है: मैं तुम्हें जातियों में से इकट्ठा करूँगा, और जिन देशों में तुम तितर-बितर कर दिये गये हो, वहाँ से तुम्हें एकत्र करूँगा; और मैं तुम्हें इस्राएल का देश दूँगा। और वे वहाँ आएँगे, और वहाँ की सब घृणित वस्तुओं और उसकी सब घृणितताओं को वहाँ से दूर कर देंगे। और मैं उन्हें एक मन दूँगा, और मैं तुम्हारे भीतर एक नई आत्मा डालूँगा; और मैं उनकी देह से पत्थर का हृदय निकाल दूँगा, और उन्हें मांस का हृदय दूँगा।
यहेजकेल 11:14-19.

'बिखराव' के संदर्भ में एक लाख चवालीस हज़ार के एकत्र किए जाने के बारे में अभी बहुत कुछ कहा जाना बाकी है, पर पहले हमें उन नौ संदर्भों में, जिन पर हम विचार कर रहे हैं, अल्फा और ओमेगा के चिह्न के संबंध में विचारों को समेकित करना होगा।

उत्पत्ति के अंतिम तीन अध्यायों में दो वर्ग चित्रित किए गए हैं। एक विद्रोहियों का वर्ग और एक बुद्धिमानों का वर्ग। दोनों वर्ग एक आवाज़ सुनते हैं जो कहती है, "यह मार्ग है, इसी पर चलो", परन्तु एक वर्ग ने नरसिंगे की ध्वनि पर कान न धरा और पुराने मार्गों पर चलने से इन्कार कर दिया। उत्पत्ति के अध्याय 48 से 50 में विद्रोहियों के वर्ग का प्रतिनिधित्व तेरहवें कबीले द्वारा किया गया है।

प्राचीन इस्राएल की शुरुआत में तेरह गोत्र थे और आधुनिक इस्राएल की शुरुआत में तेरह चेले थे। जो एक चेला बाकी बारह चेलों से अलग ठहराया गया है (जैसे इफ्राइम अन्य गोत्रों से अलग ठहराया गया था), दोनों ही विद्रोह के प्रतीक हैं। सिस्टर व्हाइट ने सीधे यहूदा को एक मूर्ख कुंवारी कहा है।

"गेहूँ के बीच हमेशा खरपतवार रहे हैं और रहेंगे; बुद्धिमान कुंवारियों के साथ मूर्ख कुंवारियाँ, और अपने दीपकों के साथ वे जिनके पात्रों में तेल नहीं है। पृथ्वी पर मसीह ने जो कलीसिया स्थापित की, उसमें एक लोभी यहूदा था, और कलीसिया के इतिहास के हर चरण में यहूदाओं का होना बना रहेगा।" Signs of the Times, 23 अक्टूबर, 1879.

यहूदा इस्करियोती एक मूर्ख कुंवारी था; वह एक खरपतवार था, और यदि वह मूर्ख कुंवारी था, तो वह लाओदीकियाई भी था।

"मूर्ख कुंवारियों द्वारा दर्शाई गई कलीसिया की अवस्था को लाओदिकियाई अवस्था भी कहा जाता है।" रिव्यू एंड हेराल्ड, 19 अगस्त, 1890.

यूसुफ के दोनों पुत्रों को उत्पत्ति के अध्याय अड़तालीस में याकूब से आशीर्वाद मिला, और उसके बाद से उन्हें "आधे गोत्र" कहा जाने लगा। आधे गोत्र हों या न हों, वे फिर भी गोत्र ही थे। यहूदा इस्करियोती के स्थान पर मत्तियाह को नियुक्त किया गया ताकि वह उस बारहवें स्थान को भर दे जो पहले यहूदा इस्करियोती के पास था। यहूदा एक शिष्य था, और इस अर्थ में—प्राचीन इस्राएल के अंत में तेरह शिष्य थे, जैसे आरंभ में तेरह गोत्र थे।

यूसुफ का पुत्र इफ्रैम (तेरहवां गोत्र) विद्रोह का प्रतीक तब बना जब उत्तरी दस गोत्र यारोबाम के समर्थन में एकजुट हुए और राज्य दस उत्तरी और दो दक्षिणी गोत्रों में बँट गया। मैं यूसुफ के पुत्र इफ्रैम को उसके भाई मनश्शे के बजाय विद्रोह का प्रतीक क्यों ठहराता हूँ? इफ्रैम से जुड़ा यह विद्रोह अध्याय अड़तालीस में शुरू होता है, इससे पहले कि याकूब अपने बारह पुत्रों को आशीर्वाद दे। अध्याय अड़तालीस में याकूब पहले यूसुफ के दो पुत्रों को आशीर्वाद देता है।

क्योंकि मनश्शे ज्येष्ठ था, यूसुफ अपेक्षा करता था कि अपने पुत्रों में पहला आशीर्वाद मनश्शे को मिले, और यूसुफ याकूब द्वारा इफ्रैम को चुनने के विरुद्ध विद्रोह करता है।

परमेश्वर के चुने हुएों के प्रतिनिधि के रूप में इफ्रैम की शुरुआत विद्रोह की गवाही लिए हुए है, और इफ्रैम का अंत लैव्यव्यवस्था अध्याय छब्बीस में वर्णित 'सात गुना' के तितर-बितर होने के रूप में 723 ईसा पूर्व से 1798 तक विस्तृत होता है। 723 ईसा पूर्व में उत्तरी दस गोत्र, अर्थात् इफ्रैम का राज्य (जिसे इस्राएल भी कहा जाता है), बाइबिलीय भविष्यवाणी में वर्णित एक राज्य के रूप में एक घातक घाव प्राप्त करता है। उस घातक घाव से एक समय-संबंधी भविष्यवाणी का आरम्भ हुआ, जो 1798 में पापसी सत्ता और उसके राज्य के घातक घाव पाने के साथ पूर्ण हुई। 1798 में पापसी सत्ता का घातक घाव बाबुल के अंतिम पतन का प्रतीक है, जब दानियेल अध्याय ग्यारह, पद पैतालीस में वर्णित अनुसार उत्तरी राजा 'अपने अंत को पहुँचेगा, और उसकी सहायता करने वाला कोई न होगा'। अंतिम दिनों में बाबुल के विद्रोह और पतन का प्रतीक 1798 में पापसी सत्ता का विद्रोह और पतन था, जो बदले में 723 ईसा पूर्व में इफ्रैम (इस्राएल) के राज्य के विद्रोह और पतन का प्रतीक था, जो कि आगे चलकर उत्पत्ति के अंत में उल्लिखित अपने पिता की भविष्यसूचक प्रेरणा के प्रति यूसुफ के विद्रोह का प्रतीक था।

जिस विद्रोह का इफ्रैम प्रतीक है, उसकी शुरुआत उसके पिता (यूसुफ) के अपने पिता (याकूब) के विरुद्ध विद्रोह से हुई। अंततः यह उत्तर के दस गोत्रों के विद्रोह तक पहुँचता है, जो लैव्यव्यवस्था अध्याय 26 में "सात गुना" के रूप में प्रस्तुत "विखराए जाने" की ओर ले जाता है। जिस अवधि में उत्तरी राज्य बिखरा रहा, वह दो अवधियों में विभाजित है—एक का अंत सन 538 में, अगली का अंत 1798 में होता है; और ये सब उस संदेश की ओर संकेत करते हैं जो प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में अनुग्रह का समय बंद होने से ठीक पहले अनावृत्त किया जाता है। वह संदेश बाबुल के अंतिम पतन को चिन्हित करता है। इफ्रैम के भविष्यवाणी संबंधी इतिहास के प्रत्येक मार्गचिह्न पर विद्रोह चिह्नित है—ठीक वैसे ही जैसे तेरहवें शिष्य, यहूदा इस्करियोती, का विद्रोह। ये उन गवाहों में से दो हैं जो संख्या तेरह को विद्रोह का प्रतीक ठहराते हैं। परंतु इन पवित्र सत्यों में से कोई भी तब तक पहचाना नहीं जा सकता जब तक कोई व्यक्ति उस एडवेंटिज़्म की नींव पर खड़ा न हो, जो उस पहले सत्य पर बनाई गई थी जिसे मिलर ने खोजा था, और जिसे सबसे पहले एडवेंटिज़्म ने ही त्याग दिया।

उत्पत्ति का समापन उन अन्य सभी पंक्तियों से मेल खाता है जिन पर हम विचार कर रहे थे। सारांशः

आदि में पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा की स्वर्गीय त्रयी आकाश और पृथ्वी की उस सृष्टि की साक्षी थी, जिसे पुत्र, जो वचन भी है, ने संपन्न किया। वचन पिता से मनुष्यों तक संचार का माध्यम बना, और वही वचन मनुष्य के लिए पिता से संवाद करने का एकमात्र मार्ग है। पिता का संदेश पुत्र ने स्वर्गदूत गब्रिएल को दिया, जिसने स्वर्ग में लूसिफर के विद्रोह के बाद लूसिफर (प्रकाश का वाहक) का स्थान लिया। गब्रिएल उस प्रकाश, अर्थात् संदेश, को प्राप्त करता है और उसे एक भविष्यद्वक्ता को सौंपता है, जो एक पवित्र सृजित प्राणी है, जिसे पिता का संदेश पतित सृष्ट परिवार तक पहुँचाने के लिए नियुक्त किया गया है। भविष्यद्वक्ता को दिया गया संदेश लिख लिया जाता है और फिर मनुष्यों तक पहुँचाया जाता है। संचार की प्रक्रिया के हर चरण में संदेश पवित्र रहता है, और इसी कारण भविष्यद्वक्ता, जो पतित मानव प्राणी हैं, पवित्र होने चाहिए। जब पवित्र संदेश पतित मानवता के हाथों में सौंप दिया जाता है, तब यह संभावना रहती है कि मानवता पवित्र संदेश को अपवित्र हाथों से संभाले। इस प्रकार, पवित्र संदेश का प्रकाश प्रकाश भी उत्पन्न करता है और अंधकार भी। जब यह संदेश पतित मानव परिवार के लोगों द्वारा ग्रहण किया जाता है, तब इसमें वही सृजनात्मक शक्ति निहित होती है जिसने सब वस्तुओं की रचना की, और वही शक्ति उस व्यक्ति को धर्मी ठहराती है। संचार प्रक्रिया का आरंभ ही उसकी समाप्ति का भी चित्रण करता है। इसलिए, यदि संदेश सुना, पढ़ा और पालन किया जाए, तो यह संदेश पतित मानवता को पुत्र की प्रतिमा में फिर से रच देता है।

धन्य है वह जो पढ़ता है, और वे जो इस भविष्यवाणी के वचन सुनते हैं, और उन बातों का पालन करते हैं जो उसमें लिखी हैं; क्योंकि समय निकट है। प्रकाशितवाक्य 1:3.

यूहन्ना "अन्वेषणात्मक न्याय" के "अंतिम दिनों" में गिरी हुई मानवता का चित्रण करता है, जो अपने पीछे से आती हुई आवाज़ सुनते हैं और अतीत की ओर ले जाने वाले संदेश को ग्रहण करने के लिए पीछे मुड़ते हैं। जो उस संदेश को ग्रहण करते हैं और उसे अपनी ज़िंदगी का केवल एक हिस्सा नहीं, बल्कि पूरी की पूरी ज़िंदगी बना लेते हैं, वे वहीं उसी समय धर्मी ठहराए जाते हैं। धर्मी ठहराया जाना ही पवित्र बनाया जाना है। जब पिता की ओर से भेजे गए संदेश को पढ़ने और सुनने वाले उसे स्वीकार करते हैं और पवित्र बनाए जाते हैं, तो यह उसी संदेश के भीतर निहित सृजनात्मक शक्ति के द्वारा होता है। जब मनुष्य अब्राहम की तरह विश्वास करते हैं, तब वही सृजनात्मक शक्ति मनुष्यों को धर्मी ठहराने का कार्य पूरा करती है। यह संदेश उन्हें मुड़कर पीछे से आती आवाज़ सुनने की शिक्षा देता है, जो उन्हें पुराने मार्गों की ओर ले जाती है, जो मूलभूत सत्य हैं। यह संदेश उन्हें समस्त सत्य में मार्गदर्शन देता है, और जब वे पुराने मार्गों पर चलते हैं, तो वे धर्मी ठहराए गए लोगों के मार्ग पर चल रहे होते हैं।

परन्तु धर्मियों का पथ उज्ज्वल प्रकाश के समान है, जो पूर्ण दिन होने तक अधिकाधिक चमकता जाता है। दुष्टों का मार्ग अन्धकार के समान है; वे नहीं जानते कि वे किस पर ठोकर खाते हैं। मेरे पुत्र, मेरी बातों पर ध्यान दे; मेरी वाणियों की ओर अपना कान लगा। उन्हें अपनी आँखों से ओझल न होने दे; उन्हें अपने हृदय के मध्य में रख। क्योंकि जो उन्हें पाते हैं उनके लिये वे जीवन हैं, और उनके सारे शरीर के लिये स्वास्थ्य। सारे मनोयोग से अपने हृदय की रक्षा कर; क्योंकि जीवन के स्रोत उसी से निकलते हैं। टेढ़ी वाणी को अपने से दूर कर, और कुटिल होंठों को अपने से दूर रख। तेरी आँखें सीधे आगे देखें, और तेरी पलकें तेरे सामने सीधी रहें। अपने पैरों के मार्ग पर विचार कर, और तेरे सब मार्ग दृढ़ हों। न दाहिने मुड़, न बाएँ; अपना पाँव बुराई से हटा ले। नीतिवचन 4:18-27।

प्रेषित संदेश द्वारा धर्मी ठहराए गए लोग ऐसे पथ पर चलते हैं जो अधिकाधिक बढ़ती हुई ज्योति का द्योतक है, पर वही प्रकाश दुष्टों का मार्ग उसी अनुपात में और अधिक अंधकारमय कर देता है। प्रकाश अंधकार से अलग कर देता है। वह सृजनात्मक शक्ति जिसने आदि में प्रकाश होने की आज्ञा दी थी, अंत में भी मनुष्यों पर वही प्रभाव उत्पन्न करती है जैसा कि आरंभ में प्रकाश ने किया था। जो वर्ग पीछे से आने वाली वाणी सुनने से इनकार करता है और इसलिए अंधकारमय पथ पर चलना चुनता है, वे उसके वचन पर "ठोकर" खाते हैं, क्योंकि वे आधारशिला, उस पुरानी परखी हुई शिला पर ठोकर खाते हैं। वह वाणी अल्फा और ओमेगा है, और जब धर्मी ठहराए गए लोग वे वचन सुनते हैं और अपने हृदय उन वचनों की ओर झुका देते हैं, तो वे उन वचनों को अपने हृदय के बीचोबीच रखते हैं, क्योंकि अल्फा और ओमेगा उनके हृदय पितरों की ओर (अतीत) मोड़ देता है, और पितरों के हृदय अंत की ओर संकेत करते हैं।

धर्मियों का मार्ग सीधाई है; तू, हे अत्यन्त न्यायी, धर्मियों के पथ को परखता है। हाँ, तेरे न्यायों के मार्ग में, हे प्रभु, हम ने तेरी प्रतीक्षा की है; हमारे प्राण की अभिलाषा तेरे नाम और तेरे स्मरण की है। रात में मेरे प्राण ने तुझे अभिलाषित किया है; हाँ, मेरे भीतर की आत्मा से मैं भोर को तुझे खोजूँगा; क्योंकि जब तेरे न्याय पृथ्वी पर होते हैं, तब जगत के निवासी धर्म सीखेंगे। यशायाह 26:7-9.

परमेश्वर धर्मियों के मार्ग पर चलने वालों को तौलते हैं, अर्थात् वे उनका न्याय करते हैं; और वे ऐसा "अंतिम दिनों" में करते हैं, जब उनके न्याय धरती पर प्रकट होते हैं। धर्मी वे हैं जिन्होंने दस कुँवारियों के दृष्टान्त में विलंब के समय की पूर्ति में प्रभु की प्रतीक्षा की है। बढ़ते ज्ञान के मार्ग पर चलने वालों की इच्छा परमेश्वर के नाम, उनके चरित्र, की अधिकाधिक समझ पाने की होती है। जिन्होंने अपने प्रभु की प्रतीक्षा की है, वही अंतिम चेतावनी का संदेश सुनाते हैं, क्योंकि वही "आधी रात की पुकार" का प्रचार करते हैं, जो निस्संदेह प्रकाशितवाक्य अठारह का पहला आंतरिक संदेश है, जिसके बाद दूसरा बाहरी संदेश आता है।

इसके बाद मैंने देखा कि एक और स्वर्गदूत, जिसके पास बड़ा सामर्थ्य था, स्वर्ग से उतर आया; और उसकी महिमा से पृथ्वी प्रकाशित हो गई। और उसने बड़े स्वर से बलपूर्वक पुकारकर कहा, बाबुल महान गिर गया, गिर गया है, और दुष्टात्माओं का निवासस्थान बन गया है, और हर एक अशुद्ध आत्मा का आवास, और हर एक अशुद्ध और घृणित पक्षी का पिंजरा। क्योंकि सब जातियों ने उसके व्यभिचार के क्रोध का दाखमधु पिया है, और पृथ्वी के राजाओं ने उसके साथ व्यभिचार किया है, और पृथ्वी के व्यापारी उसकी विलासिताओं की बहुतायत से

धनवान हो गए हैं। और मैंने स्वर्ग से एक और शब्द सुना, जो कहता था, हे मेरे लोगो, उससे बाहर निकल आओ, कि तुम उसके पापों के सहभागी न बनो और उसकी विपत्तियों में से कुछ न पाओ। प्रकाशितवाक्य 18:1-4.

जब 11 सितंबर, 2001 को प्रकाशितवाक्य 18 का स्वर्गदूत उतरा, तो सेवेंथ-डे ऐडवेंटिस्ट कलीसिया ने पुराने मार्गों पर लौटने के उस अंतिम आह्वान को अस्वीकार कर दिया। तब वह संयुक्त राज्य अमेरिका में सच्चे प्रोटेस्टेंटवाद का सींग रहना बंद हो गई। उसी समय उन लोगों के लिए एक परीक्षा की प्रक्रिया शुरू हुई जिन्होंने उस प्रबल आवाज़ के संदेश को लेना और उसे खाना चुना, जैसा कि यूहन्ना द्वारा प्रतिरूपित किया गया था, जब प्रकाशितवाक्य 10 का स्वर्गदूत 11 अगस्त, 1840 को ऐडवेंटवाद की शुरुआत में उतरा। वह आध्यात्मिक राष्ट्र, जिसने प्रथम स्वर्गदूत का संदेश अस्वीकार किए जाने पर सच्चे प्रोटेस्टेंटवाद का चोगा उठा लिया था, तब ऐडवेंटवाद की शुरुआत में धर्मत्यागी प्रोटेस्टेंटवाद के पदचिह्नों पर चल पड़ा।

तब सच्चे प्रोटेस्टेंटवाद का सींग उन लोगों को दिया गया जिन्होंने प्रकाशितवाक्य अध्याय दस में स्वर्गदूत के हाथ में रही छोटी पुस्तक का संदेश स्वीकार किया। 1840 से 1844 तक ऐडवेंटवाद की शुरुआत में हुई परीक्षण प्रक्रिया, ऐडवेंटवाद के अंत में 11 सितंबर 2001 से लेकर संयुक्त राज्य अमेरिका में रविवार के कानून तक चलने वाली परीक्षण प्रक्रिया का प्रतिनिधित्व करती है। 1840 से 1844 की पहली ऐतिहासिक अवधि और 11 सितंबर 2001 को शुरू हुई परीक्षण प्रक्रिया, दोनों एक व्यवस्थाकालीन संक्रमण को चिह्नित करती हैं—प्रोटेस्टेंटवाद का चोगा धारण करने वाले पूर्ववर्ती विश्वासियों के समूह से सच्चे प्रोटेस्टेंटवाद का चोगा ग्रहण करने वाले नए विश्वासियों के समूह तक।

धर्मो ठहराए गए लोगों के मार्ग पर हमारे विचार के लिए इससे भी अधिक महत्वपूर्ण यह है कि उस इतिहास के भीतर एक निराशा है, जो विलंब के समय की शुरुआत को चिह्नित करती है। उस समय में विश्वासयोग्य अपने प्रभु की प्रतीक्षा करते हैं, जो आधी रात की पुकार के संदेश की मुहर खुलने के साथ समाप्त होता है। ऐडवेंटवाद की शुरुआत में वह परीक्षा-प्रक्रिया तब समाप्त हुई जब आधी रात की पुकार का संदेश 22 अक्टूबर, 1844 को समाप्त हुआ। अंत में यह परीक्षा-प्रक्रिया संयुक्त राज्य में रविवार के कानून के समय, उन लोगों के लिए जो यूहन्ना द्वारा दर्शाए गए हैं, समाप्त होती है। अंत में आधी रात की पुकार का संदेश ठीक वैसे ही समाप्त होगा, जैसे आरंभ में हुआ था, और ऐडवेंटवाद के आरंभ में, परीक्षा-प्रक्रिया के समाप्त होने से पहले ही आधी रात की पुकार के संदेश की मुहर खोली गई थी। आरंभ में रही आधी रात की पुकार का संदेश अब अंत में मुहर खोला जा रहा है।

धर्मो ठहराई गई बुद्धिमान कुँवारियाँ परमेश्वर के साथ वाचा में प्रवेश करती हैं, जबकि दुष्ट मूर्ख कुँवारियाँ मृत्यु की वाचा में प्रवेश करती हैं।

जिनसे उसने कहा, यह वह विश्राम है जिससे तुम थके-माँदे को विश्राम दे सकते हो; और यह वह ताज़गी है; तौभी वे सुनना नहीं चाहते थे। परन्तु उनके लिये यहोवा का वचन यह हुआ: आदेश पर आदेश, आदेश पर आदेश; पंक्ति पर पंक्ति, पंक्ति पर पंक्ति; यहाँ थोड़ा, वहाँ थोड़ा; ताकि वे जाएँ, और उल्टे गिरें, और टूट जाएँ, और फँसकर पकड़े जाएँ। इसलिए, हे ठट्टा करनेवालो, जो यरूशलेम में इस प्रजा पर शासन करते हो, यहोवा का वचन सुनो। क्योंकि तुमने कहा है, हमने मृत्यु के साथ एक वाचा बाँधी है, और अधोलोक के साथ हमारा समझौता हुआ है; जब वह उमड़ती विपत्ति गुज़रेगी, वह हम तक नहीं पहुँचेगी, क्योंकि हमने झूठ को अपनी शरण बनाया है, और मिथ्या के नीचे हमने अपने आप को छिपा रखा है। इस कारण प्रभु यहोवा यूँ कहता है: देखो, मैं सिय्योन में नींव के लिये एक पत्थर रखता हूँ—एक परीखा हुआ पत्थर, बहुमूल्य कोने का पत्थर, दृढ़ नींव; जो विश्वास करता है वह घबराएगा नहीं। यशायाह 28:12-16.

धर्मो ठहराए गए लोग आधी रात की पुकार का पवित्र संदेश कलीसिया तक पहुँचाते हैं, और उसके बाद वे मानवजाति को बाबुल से बाहर बुलाते हुए दूसरी आवाज़ का संदेश घोषित करते हैं।

अतः संसार को चेतावनी देने के अंतिम कार्य में, कलीसियाओं को दो अलग-अलग बुलाहटें दी जाती हैं। दूसरे स्वर्गदूत का संदेश है, 'बाबुल गिर गया, गिर गया, वह महान नगर, क्योंकि उसने अपने व्यभिचार के क्रोध की दाखमधु से सब जातियों को पिलाया है।' और तीसरे स्वर्गदूत के संदेश की उच्च पुकार में स्वर्ग से यह आवाज़

सुनाई देती है: 'हे मेरे लोगों, तुम उससे निकल आओ, कि उसके पापों के भागी न बनो, और उसकी जो मारें हैं, वे तुम पर न आएँ। क्योंकि उसके पाप स्वर्ग तक पहुँच गए हैं, और परमेश्वर ने उसकी अधर्मताओं को स्मरण किया है।' Review and Herald, 6 दिसंबर, 1892.

जो लोग बाबुल से बाहर आकर धर्मियों के मार्ग पर चलनेवालों से जुड़ते हैं, वे स्वर्गीय त्रय के नाम द्वारा दर्शाए गए बपतिस्मा के जल के माध्यम से झुंड में शामिल कर लिए जाते हैं। जो धर्मी ठहराए जाते हैं—चाहे वे हों जो अभी उस संदेश को सुन रहे हैं जो पत्मोस में यूहन्ना को दिया गया था, या वे जो इसके बाद बाबुल से बाहर बुलाए जाते हैं—वे सब पवित्र आत्मा को ग्रहण करने से धर्मी ठहराए जाते हैं। पवित्र आत्मा की दिव्यता और मनुष्य की मानवता का वह संयोजन, जैसा कि उदाहरण के रूप में प्रस्तुत किया गया, तब पूर्ण हुआ जब मसीह ने अपने ऊपर मानवीय स्वभाव धारण किया। एक लाख चवालीस हजार का प्रतिनिधित्व दो साक्षियों द्वारा किया गया—याकूब के बारह पुत्र और बारह चले। दुष्टों का प्रतिनिधित्व तेरहवें गोत्र और तेरहवें चले द्वारा होता है। दोनों उदाहरणों में ये तेरहवें परमेश्वर के लिए याजक होने को बुलाए गए थे, और जो उस बुलाहट को अस्वीकार करते हैं वे एसाव द्वारा दर्शाए जाते हैं, जबकि उसका छोटा भाई याकूब उन लोगों का प्रतिनिधित्व करता है जो उस बुलाहट को स्वीकार करते हैं। संसार के अंत में एसाव और याकूब दोनों ही लाओदीकियाई सातवें दिन के एडवेंटिस्टों का प्रतिनिधित्व करते हैं। एक वर्ग भविष्यद्वक्ता की रचनाओं के माध्यम से पहुँचाए गए पवित्र संदेश को स्वीकार करता है और इस्राएल में परिवर्तित हो जाता है, जबकि एसाव अपना नाम बनाए रखता है।

निस्संदेह अल्फा और ओमेगा की इन नौ पंक्तियों में और भी बहुत कुछ है, क्योंकि यह तो केवल परमेश्वर के वचन में आरंभ और अंत का एक संक्षिप्त सार ही था।

इतिहास की नौ रेखाएँ, जो सृष्टि से लेकर मसीह के दूसरे आगमन तक के भविष्यसूचक इतिहासों का प्रतिनिधित्व करती हैं। आरम्भ और अंत की ये सभी नौ भविष्यसूचक रेखाएँ प्रकाशितवाक्य के तीसरे अध्याय की पहली तीन आयतों से सीधा संबंध रखती हैं। वे तीन आयतें यह स्पष्ट करती हैं कि “यीशु मसीह का प्रकाशितवाक्य”, जिसकी मुहर कृपा काल समाप्त होने से ठीक पहले खुलती है, परमेश्वर की सृजनात्मक शक्ति का प्रकटीकरण है। ऐसी जटिल, परस्पर गुंथी हुई गवाही, जिसे विविध साक्षियों ने मूसा के समय से लेकर प्रकाशितवाक्य के यूहन्ना के समय तक दी, और कौन-सी शक्ति रच सकती है?

अपने जूते उतारो, क्योंकि यह पवित्र भूमि है।